Hindi Homework

शीर्षक :- "काकी" "सियारामशरण गुप्त"

पात्र – श्यामू स्वयं
उमा – काकी

अगोचर – जो नहीं दिखाई पड़े।

पात्र – विश्वेश्वर – काका
उत्कंठित – प्रतीक्षा
भोला – भोले
मुखबीर – गवाह से कुबलवाना।
हतबुद्धि – अवाक

यह ~~प्रस्तुत~~ कहानी बालक श्यामू उसकी काकी उमा एवं उसके काका विश्वेश्वर तथा श्यामू का चाचा विश्वेश्वर की कहानी है। कहानी यह है कि श्यामू की काकी उमा की मृत्यु के पश्चात् जब उसे श्मशान ले जाया गया है श्यामू बड़ी उदास रहने लगा। उसके उदासी को दूर करने के लिए लोगों ने समझाया कि काकी ऊपर राम के यहाँ गया है। यह बात उसके मन में बैठ गया था। उदासी थोड़ी कम गया था एक दिन उड़ती हुई पतंग को देखकर श्यामू के मन में अभिलाषा जगी कि क्यों न एक पतंग खरीदकर आकाश में काकी के पास भेजी जाय ताकि जिसके सहारे वह नीचे आ जाय।

3 Hindi Honours.

श्यामू ने विश्वेश्वर जी के कोट से चवन्नी की चोरी की, भोला की सहायता से पतंग मंगवायी गई। लेकिन भोला ने यह तर्क दिया कि पतले सूता की अपेक्षा मोटी रस्सी का प्रयोग किया जाय। अब मोटी रस्सी के लिए श्यामू विश्वेश्वर की कोट से एक रुपये की चोरी की, रस्सी भी मंगाई गई। जवाहर भइया से उस पतंग पर "काकी" लिखा दिया गया। अंधेरे घर में पतंग से रस्सी बांधी जा रही थी कि अचानक विश्वेश्वर काका गायब पैसे को ढूंढने श्यामू के तलाश में पहुँचके भोला ने पोल खोल दिया। श्यामू की पिटाई हुई। पतंग फाड़ी गई। रस्सी के विषय में पूछा गया भोला ने रहस्य खोला कि पतंग तानकर काकी को राम के यहाँ से नीचे उतारने के लिए ऐसा किया गया था। विश्वेश्वर अवाक होकर फटी पतंग देखने लगे उस पर चिपके कागज पर लिखा हुआ था 'काकी'।

इस कहानी के द्वारा लेखक काकी और श्यामू के प्रेम की पराकाष्ठा दिखाना चाहते हैं। श्यामू के उम्र के हर बच्चे माँ या काकी को खोकर इसी प्रकार के शोक का अनुभव करता है और रात दिन इसी चिंता में लगा रहता है।